Various Dimensions of Social Culture

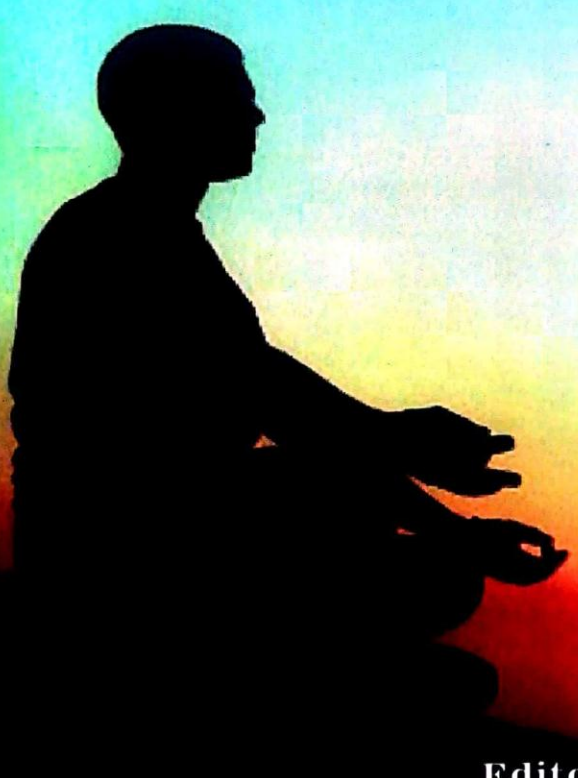

Editors
Prof. Damodar Shastri
Dr. Bijendr Pradhan
Dr. Hemlata Joshi

Scanned with CamScanner

आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य में चेतना

डॉ. हेमलता जोशी

सहायक आचार्य,
योग एवं जीवन विज्ञान विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

सारांश

हमारा जीवन जड़ और चेतना का समन्वित रूप है। इन दोनों का अपना विशेष महत्त्व है। अंतर इतना है कि जड़ क्रियाशील है तो चेतना ज्ञानवान है। ज्ञान चेतना के द्वारा ही हो सकता है अन्य के द्वारा नहीं। शरीर, मन आदि क्रियाशील हैं तो वह चेतना के कारण हैं। अतः चेतना जीवन का पर्याय है। चेतना को जानना, समझना और इसकी सटीक व्याख्या करना सरल कार्य नहीं है। प्रत्येक दर्शन अपने–अपने ढंग से चेतना की व्याख्या करते हैं। कोई इसे पुरुष मानता है तो कोई इसे आत्मा। नाम भले ही भिन्न–भिन्न हों पर विशेषता एक ही है अनुभव करना, ज्ञान करना।

कुंजी : चेतना, अतीन्द्रिय ज्ञान, आत्मा, अध्यात्म।

Scanned with CamScanner